हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2022

एम.एच.डी.-14 : हिन्दी उपन्यास–1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : ***पहला*** *और* ***छठा*** *प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं* ***दो*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***दो*** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) विवाह एक धार्मिक व्रत है, एक आत्मिक प्रतिज्ञा है । जब हम गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करते हैं, जब हमारे पैरों में धर्म की बेड़ी पड़ती है, जब हम सांसारिक कर्तव्य के सामने अपने सिर को झुका देते हैं, जब जीवन का भार और उनकी चिन्ताएँ हमारे सिर पर पड़ती हैं, तो ऐसे पवित्र संस्कार पर हमको गाम्भीर्य से काम लेना चाहिए ।

(ख) तुम इस भ्रम में पड़े हुए हो कि मनुष्य अपने भाग्य का विधाता है । यह सर्वथा मिथ्या है । हम तकदीर के खिलौने हैं, विधाता नहीं । वह हमे अपने इच्छानुसार नचाया करती है । तुम्हें क्या मालूम कि जिसके लिए तुम सत्यासत्य में विवेक नहीं करते, पुण्य और पाप को समान समझते हो, वह उस शुभ मुहुर्त तक सभी विघ्न-बाधाओं से सुरक्षित रहेगा ?

(ग) संसार में कौन है, जो कहे कि मैं गंगाजल हूँ । जब बड़े-बड़े साधू-संन्यासी माया-मोह में फँसे हुए हैं तो हमारी तुम्हारी क्या बात है । हमारी बड़ी भूल यही है कि खेल को खेल की तरह नहीं खेलते । खेल में धाँधली करके कोई जीत ही जाए, तो क्या हाथ आएगा ? खेलना तो इस तरह चाहिए कि निगाह जीत पर रहे, पर हार से घबराए नहीं, ईमान को न छोड़े ।

(घ) उन्नत देशों में धन व्यापार में लगता है, जिससे लोगों की परवरिश होती है, और धन बढ़ता है । यहाँ धन ! श्रृंगार में खर्च होता है, उससे उन्नति और उपकार की जो दो महान शक्तियाँ हैं, उन दोनों का अन्त हो जाता है । बस यही समझ लो कि जिस देश के लोग जितने ही मूर्ख होंगे, वहाँ जेवरों का प्रचार भी उतना ही अधिक होगा ।

2. प्रेमचन्द के साहित्य विषयक विचारों का परिचय दीजिए । *10*

3. 'सेवासदन' की शिल्प संरचना का विवेचन कीजिए । *10*

4. ज्ञान शंकर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । *10*

5. 'रंगभूमि' में अभिव्यक्त औद्योगीकरण की समस्या को स्पष्ट कीजिए । *10*

6. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×5=10*

(क) सुमन के चरित्र की विशेषताएँ

(ख) गबन के स्त्री-पात्र

(ग) प्रेमचन्द के उपन्यास सम्बन्धी विचार

(घ) गबन का रचनात्मक उद्देश्य